संक्षेपण

संक्षेपण का अर्थ – संक्षेपण का अर्थ है किसी बात को संक्षेप में कहना या लिखना। दूसरे शब्दों में, किसी लम्बे चौड़े अवतरण को संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को ही संक्षेपण कहते हैं।

संक्षेपण की प्रक्रिया सारांश, आशय, अन्वय, भावार्थ इत्यादि से भिन्न होती है। सारांश के संदर्भ का सार अंश ही लिया जाता है पर इसके आकार की सीमा निर्धारित नहीं होती। पर संक्षेपण में केवल केवल सार अंश ही नहीं, सभी आवश्यक बातों को क्रमानुसार सजाया जाता है। इसके आकार की भी सीमा निर्धारित रहती है। सामान्यतः संक्षेपण संदर्भ का एक तिहाई होना चाहिए। दो-चार शब्द अधिक या कम हो सकते हैं। आशय में स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है, पर संक्षेपण में इसकी गुंजाइश नहीं रहती। अन्वय में मुख्य और गौण दोनों प्रकार के तथ्यों को प्रकट किया जाता है पर संक्षेपण में तथ्यों पर ध्यान कम दिया जाता है। विचारों की संक्षिप्तता भावार्थ और संक्षेपण दोनों में रहती है, किंतु का विस्तार सीमा निश्चित रहती है जबकि (जैसा ऊपर कहा जा चुका है) संक्षेपण सीमाबद्ध होता है।

संक्षेपण के मुख्य तत्व :–

(क) शीर्षक – मूल अवतरण को पढ़कर एक उपयुक्त शीर्षक दें। जैसे चेहरे के रंग को देखकर हृदय का भाव जान लिया जाता है उसी तरह शीर्षक ऐसा होना चाहिए कि उसे पढ़ते ही यह समझ में आ जाय की मूल अवतरण में किस बात पर प्रकाश डाला गया है। ध्यान रखें, शीर्षक लम्बा न हो।

(ख) संक्षेपण में मूल अवतरण की

रमण कुमार

सभी प्रमुख बातें आ जानी चाहिए और सूक्ष्मता रूप में। अतः संक्षेपण करने में मूल अवतरण को तीन बार ध्यान से पढ़ना चाहिए, फिर सार को ग्रहण कर छोटे से छोटा लिखना चाहिए। उसमें एक भी अनावश्यक शब्दों का स्थान नहीं होना चाहिए। संक्षेपण लिखने के पहले समास एवं सामासिक शब्दों की आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। सामान्यतः संक्षेपण की विस्तार सीमा मूल अवतरण की 1/3 होनी चाहिए।

(ग) चिरन्तन सत्य को प्रकट करने वाले तथ्यों को छोड़कर और सभी कथन परोक्ष रूप में हो इसका सदा ध्यान रखें। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि संक्षेपण सदा तृतीय पुरुष में लिखा जाना चाहिए।

(घ) वाक्य छोटे छोटे हो और विचार की अभिव्यक्ति स्पष्ट हो, इस बात को भी संक्षेपण लिखते समय याद रखें।

संक्षेपण के नियम :

(क) संक्षेपण में मूल अवतरण में व्यक्त विचारों का सारांश अपनी भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए। कथन के शब्दों का उसी रूप में प्रयोग नहीं होना चाहिए।

(ख) संक्षेपण की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए। वाक्य लघु एवं चुस्त तथा पुनरुक्ति दोष से मुक्त हो।

(ग) संक्षेपण को अपने आप में पूर्ण होना चाहिए। मूल में असम्बद्ध अंशों को सारांश में स्थान नहीं देना चाहिए। कोई महत्वपूर्ण अंश

हो तो छूटे और न अप्रासंगिक अंश जुड़े। इसका ध्यान रखना चाहिए।

(ङ) इसमें किसी प्रकार की आलोचना नहीं होनी चाहिए।

(च) इसमें क्रमबद्धता नितांत आवश्यक है और इसके लिए महत्वपूर्ण विचार-बिन्दुओं को रेखांकित कर लेना चाहिए।

(छ) उद्धरण से बचना चाहिए। यदि उद्धरण परमावश्यक ही हो तो उसे प्रसंगानुकूल और लघु होना चाहिए।

(ज) इसमें केन्द्रीय विचारों की प्रमुखता होनी चाहिए।

(झ) संक्षेपण को मूल अवतरण का तृतीयांश होना चाहिए। इसके लिए मूल अवतरण को सावधानीपूर्वक दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए तथा उसके मूल विचारों को ध्यान में रखना चाहिए।

(ञ) किसी भी दशा में अपना मौलिक या स्वतंत्र विचार इसमें न जोड़ा जाय।

(ट) यदि निश्चित शब्द संख्या में संक्षेपण करने का निर्देश हो और वह संख्या एक-तिहाई हो अथवा न हो तब भी निर्धारित एवं निर्देशित शब्द संख्या में ही संक्षेपण प्रस्तुत किया जाय।

डॉ. बलराम कुमार
हिंदी विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर